



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक हिन्दू	28-9-24	10	5-8

खूबसूरती और सेहत के लिए मोरिंगा वरदान : कुलपति

हिसार, 27 सितंबर (हप्र)

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (हकृवि) के मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के जैव रसायन विभाग द्वारा 'मोरिंगा की क्षमता को पहचानना : विश्व स्वास्थ्य और जलवायु परिवर्तन के प्रति सहनशीलता के अवसर' विषय पर 10 दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम संपन्न हुआ।

इस कार्यशाला में 25 प्रतिभागियों ने भाग लिया जिसमें हकृवि के अलावा जीजेयू हिसार, एसकेएनएयू जोबनेर, डॉ. वाईएस परमार यूनिवर्सिटी ऑफ हॉर्टिकल्चर एंड फोरेस्ट्री व उतरांचल यूनिवर्सिटी देहरादून, के विद्यार्थी व वैज्ञानिक शामिल थे। कार्यशाला के समापन अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो.



हिसार में शुक्रवार को प्रतिभागियों को प्रमाण-पत्र वितरित करते कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज।

बीआर काम्बोज मुख्यातिथि रहे। कुलपति प्रो. काम्बोज ने अपने संबोधन में कहा कि मोरिंगा स्वास्थ्य लाभ वाले पोषक तत्वों का एक प्रमुख स्रोत है। मोरिंगा सेहत के लिए वरदान है। इस पौधे के सभी भाग फायदेमंद होते हैं लेकिन इसके पत्ते अधिक गुणकारी होते हैं। मोरिंगा न सिर्फ सेहत के लिए फायदेमंद है बल्कि इसे ब्यूटी प्रोडक्ट के रूप में भी इस्तेमाल

किया जाता है। इसमें विभिन्न प्रकार के विटामिन पर्याप्त मात्रा में पाए जाते हैं। मोरिंगा एक बहुउद्देशीय पौधा है जिसे आहार, औषधीय, औद्योगिक और चारे के उद्देश्य से भी उगाया जाता है। चारे की फसल के रूप में मोरिंगा को बढ़ावा दिया जा रहा है।

उन्होंने बताया कि खाद्य पदार्थों के अलावा मोरिंगा का प्रयोग ईंधन, पशु चारा, उर्वरक, सौंदर्य प्रसाधन

एवं इत्र में भी किया जाता है। मोरिंगा हीमोग्लोबिन को बेहतर बनाने में मदद करता है। रक्तचाप व कोलेस्ट्रॉल को नियंत्रित करता है। लीवर और किडनी को डिटॉक्सीफाई करता है। वजन को घटाने व शुगर लेवल को नियंत्रित करता है। तनाव, चिंता को कम करता है। थायरॉइड फंक्शन में सुधार करता है। स्तनपान कराने वाली माताओं के दूध में बढ़ोतरी करता है।

प्रो. काम्बोज ने सभी प्रतिभागियों से इस कार्यशाला का लाभ उठाने के लिए कहा और अलग-अलग विभागों को मिलकर कार्य करने के लिए प्रेरित किया। इस अवसर पर कुलपति ने प्रतिभागियों को प्रमाण-पत्र व मोरिंगा के पौधे भी वितरित किए। इस अवसर पर अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग, विभागाध्यक्ष डॉ. जयंती टोकस ने भी संबोधित किया।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हरि मूिमिन्तुज	28-9-24	9	4-8

एचएयू में मोरिंगा पर 10 दिवसीय अंतरराष्ट्रीय कार्यशाला संपन्न

मोरिंगा पूरा फायदेमंद, पत्ते और अधिक गुणकारी

हरिमूमिन्तुज ▶▶ हिसार

एचसयू के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने कहा है कि मोरिंगा स्वास्थ्य लाभ वाले पोषक तत्वों का एक प्रमुख स्रोत है। मोरिंगा सेहत के लिए वरदान है। इस पौधे के सभी भाग फायदेमंद होते हैं लेकिन इसके पत्ते अधिक गुणकारी होते हैं।

कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज शुक्रवार को मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के जैव रसायन विभाग की ओर से 'मोरिंगा की क्षमता को पहचानना: विश्व



स्वास्थ्य और जलवायु परिवर्तन के प्रति सहनशीलता के अवसर' विषय पर 10 दिवसीय अंतरराष्ट्रीय कार्यशाला एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम के समापन अवसर पर संबोधन दे रहे थे। कार्यशाला में 25 प्रतिभागियों ने भाग लिया। जिसमें हकृवि के

अलावा जीजेयू हिसार, एस्केएनएयू जोबनेर, डॉ. वाइएस परमार यूनिवर्सिटी ऑफ हॉर्टिकल्चर एंड फोरेस्ट्री व उतरांचल यूनिवर्सिटी देहरादून, के विद्यार्थी व वैज्ञानिक शामिल रहे। वीसी ने कहा कि मोरिंगा ना सिर्फ सेहत

मोरिंगा की सुपरफूड के तौर पर पहचान : गर्ग

अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने बताया कि मोरिंगा को लेकर विश्व स्तर पर अनुसंधान किए जा रहे हैं। मोरिंगा की खासियत यही है कि इसे पानी की कमी होने की स्थिति में भी उगाया जा सकता है। मोरिंगा को सुपरफूड के रूप में भी जाना जाता है क्योंकि ये कई तरह के जरूरी पोषक तत्वों, खनिज पदार्थों और विटामिंस का बेइतरीन स्रोत है। इस परियोजना के तहत हकृवि और व्यूजीलैंड की मैसी यूनिवर्सिटी के वैज्ञानिक मोरिंगा पर संयुक्त रूप से शोध कार्य करेंगे। इन्होंने भी दिया मोरिंगा पर व्याख्यान

विभागाध्यक्ष डॉ. जयती टोकस, डॉ. चंद्रशेखर कुमारी, डॉ. अक्षय भूकर, डॉ. केम मैकगिल, डॉ. योगेश जिंदल, डॉ. भागीरथ सिंह चौहान, डॉ. राजेन्द्र सांगवान, डॉ. ब्लेयर मोसेस कामांगा, डॉ. नीरू रेडू, डॉ. जसबीर सिंह, डॉ. अमित गोस्वामी, डॉ. भारतमूषण, डॉ. अतुल जैन, डॉ. अनिल दाहुजा, डॉ. फियोना, डॉ. सीमा परमार, डॉ. मुरलीधर, डॉ. शिखा यशवीर, डॉ. सुरेन्द्र धनखड़ व डॉ. संदीप आर्य व्याख्यान दिए। डॉ. राजेश गेरा, डॉ. अक्षय भूकर व यामिनी ने किया।

के लिए फायदेमंद है बल्कि इसे ब्यूटी जाता है। इसमें विभिन्न प्रकार के प्रोडक्ट के रूप में भी इस्तेमाल किया जाता है। इसमें विभिन्न प्रकार के प्रोडक्ट के रूप में भी इस्तेमाल किया जाता है। इसमें विभिन्न प्रकार के प्रोडक्ट के रूप में भी इस्तेमाल किया जाता है।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अजीत समाचार	28-9-24	5	1-4

मोरिंगा खूबसूरती व स्वास्थ्य के लिए वरदान : प्रो. काम्बोज

हिसार, 27 सितम्बर (किरेन्द्र वर्मा): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के जैव रसायन विभाग द्वारा 'मोरिंगा की क्षमता को पहचानना-विश्व स्वास्थ्य और जलवायु परिवर्तन के प्रति सहनशीलता के अवसर' विषय पर 10 दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम संपन्न हुआ। इस कार्यशाला में 25 प्रतिभागियों ने भाग लिया जिसमें हकृवि के अलावा जीजेयू हिसार, एस्केएनएयू जोबनेर, डॉ. वाईएस परमार यूनिवर्सिटी ऑफ हॉर्टिकल्चर एंड फोरेस्ट्री व उतरांचल यूनिवर्सिटी देहरादून, के विद्यार्थी व वैज्ञानिक शामिल थे। कार्यशाला के समापन अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज मुख्यातिथि रहे। कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने अपने संबोधन में कहा कि मोरिंगा स्वास्थ्य लाभ वाले पोषक तत्वों का एक प्रमुख स्रोत है। मोरिंगा सेहत के लिए वरदान है। इस पोषे के सभी भाग फायदेमंद होते हैं लेकिन इसके पत्ते अधिक गुणकारी होते हैं। मोरिंगा ना सिर्फ सेहत के लिए



कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज प्रतिभागियों को प्रमाण-पत्र वितरित करते हुए।

फायदेमंद है बल्कि इसे ब्यूटी प्रोडक्ट के रूप में भी इस्तेमाल किया जाता है। इसमें विभिन्न प्रकार के विटामिन पर्याप्त मात्रा में पाए जाते हैं। मोरिंगा एक बहुउद्देशीय पौधा

हकृवि में मोरिंगा संबंधी अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला सम्पन्न

है जिसे आहार, औषधीय, औद्योगिक और चारे के उद्देश्य से भी उगाया जाता है। चारे की फसल के रूप में मोरिंगा को बढ़ावा दिया जा रहा है। उन्होंने बताया कि खाद्य पदार्थों के अलावा मोरिंगा का प्रयोग ईंधन, पशु चारा, ऊर्कक, सौंदर्य प्रसाधन एवं इत्र में भी किया जाता है। प्रो.

काम्बोज ने बताया कि मोरिंगा हीमोग्लोबिन को बेहतर बनाने में मदद करता है। रक्तचाप व कोलेस्ट्रॉल को नियंत्रित करता है। लीवर और किडनी को डिटॉक्सीफाई करता है। वजन को घटाने व शुगर लेवल को नियंत्रित करता है। तनाव, चिंता को कम करता है। थायरॉइड फंक्शन में सुधार करता है। स्तनपान कराने वाली माताओं के दूध में बढ़ोतरी करता है। विभागाध्यक्ष डॉ. जयंती टोकस ने इस अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला एवं प्रशिक्षण के दौरान विभिन्न सत्रों के बारे में विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने बताया कि मानव संसाधन

विकास मंत्रालय द्वारा यह कार्यशाला 'स्पार्क' परियोजना के तहत आयोजित की गई। शोधार्थी अमीषा व सुजीता ने कार्यशाला के संबंध में अपने अनुभव व सांझा किए।

कार्यशाला के दौरान डॉ. चंद्रेश कुमारी, डॉ. अक्षय भूकर, डॉ. क्रेग मैकगिल, डॉ. योगेश जिंदल, डॉ. भागीरथ सिंह चौहान, डॉ. राजेन्द्र सांगवान, डॉ. ब्लेयर मोसेस कामांगा, डॉ. नीरू रेड्डू, डॉ. जसबीर सिंह, डॉ. अमित गोस्वामी, डॉ. भारतभूषण, डॉ. अतुल जैन, डॉ. अनिल दाहुजा, डॉ. फियोना, डॉ. सीमा परमार, डॉ. मुरलीधर, डॉ. शिखा यशवीर, डॉ. सुरेन्द्र धनखड़ व डॉ. संदीप आर्य ने मोरिंगा से संबंधित अपने व्याख्यान दिए। मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. राजेश गेरा ने कार्यशाला में आए हुए सभी प्रतिभागियों एवं अधिकारियों का स्वागत किया जबकि धन्यवाद प्रस्ताव डॉ. अक्षय भूकर ने पारित किया। मंच का संचालन यामिनी ने किया। इस अवसर पर सभी महाविद्यालयों के अधिष्ठाता, निदेशक, अधिकारी, शिक्षक, गैर शिक्षक, प्रतिभागी एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सत्य कहे	28-9-24	5	5-8

मोरिंगा पर आयोजित अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला में 10 दिनों तक चला मंथन मोरिंगा लीवर और किडनी के लिए फायदेमंद, रक्तचाप व कोलेस्ट्रॉल पर भी रखे नियंत्रण

● इस कार्यशाला में 25 प्रतिभागियों ने लिया भाग

सच कहें/संदीप सिंहमार हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के जैव रसायन विभाग द्वारा मोरिंगा की क्षमता को पहचानना, विश्व स्वास्थ्य और जलवायु परिवर्तन के प्रति सहनशीलता के अवसर विषय पर 10 दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम संपन्न हुआ। इस कार्यशाला में 25 प्रतिभागियों ने भाग लिया जिसमें हकूवि के अलावा जीजेयू हिसार, एसकेएनएयू जोबनेर, डॉ. वाईएस परमार यूनिवर्सिटी ऑफ हॉर्टिकल्चर एंड फोरेस्ट्री व उतरांचल यूनिवर्सिटी देहरादून के विद्यार्थी व वैज्ञानिक शामिल थे। कार्यशाला के समापन अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज मुख्यातिथि रहे। कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने अपने संबोधन में कहा कि मोरिंगा स्वास्थ्य लाभ वाले पोषक तत्वों का एक प्रमुख स्रोत है। मोरिंगा सेहत के लिए वरदान है।



कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज प्रतिभागियों के साथ।

हकूवि और न्यूजीलैंड की मैसी यूनिवर्सिटी के वैज्ञानिक करेंगे शोध

अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने बताया कि मोरिंगा को लेकर विश्व स्तर पर अनुसंधान किए जा रहे हैं। उन्होंने बताया कि मोरिंगा की खासियत यही है कि इसे पानी की कमी होने की स्थिति में भी उगाया जा सकता है। उन्होंने बताया कि मोरिंगा को सुपरफूड के रूप में भी जाना जाता है क्योंकि ये कई तरह के जरूरी पोषक तत्वों, खनिज पदार्थों और विटामिंस का बेहतरीन स्रोत है। उन्होंने कहा कि इस परियोजना के तहत हकूवि और न्यूजीलैंड की मैसी यूनिवर्सिटी के वैज्ञानिक मोरिंगा पर संयुक्त रूप से शोध कार्य करेंगे।

इस पौधे के सभी भाग फायदेमंद

इस पौधे के सभी भाग फायदेमंद होते हैं लेकिन इसके पत्ते अधिक गुणकारी होते हैं। मोरिंगा ना सिर्फ सेहत के लिए फायदेमंद है बल्कि इसे ब्यूटी प्रोडक्ट के रूप में भी इस्तेमाल किया जाता है। इसमें विभिन्न प्रकार के विटामिन पर्याप्त मात्रा में पाए जाते हैं। मोरिंगा एक बहुउद्देशीय पौधा है जिसे आहार, औषधीय, औद्योगिक और चारे के उद्देश्य से भी उगाया जाता है। चारे की फसल के रूप में मोरिंगा को बढ़ावा दिया जा रहा है। उन्होंने बताया कि खाद्य पदार्थों के अलावा मोरिंगा का प्रयोग ईंधन, पशु चारा, उर्वरक, सौंदर्य प्रसाधन एवं इत्र में भी किया जाता है। प्रो. काम्बोज ने बताया कि मोरिंगा हीमोग्लोबिन को बेहतर बनाने में मदद करता है। रक्तचाप व कोलेस्ट्रॉल को नियंत्रित करता है। लीवर और किडनी को डिटॉक्सीफाई करता है।

स्तनपान कराने वाली माताओं के लिए रामबाण

वजन को घटाने व शुगर लेवल को नियंत्रित करता है। तनाव, चिंता को कम करता है। थायराइड फंक्शन में सुधार करता है। स्तनपान कराने वाली माताओं के दूध में बढ़ोतरी करता है। प्रो. काम्बोज ने सभी प्रतिभागियों से इस कार्यशाला का लाभ उठाने के लिए कहा और अलग-अलग विभागों को मिलकर कार्य करने के लिए प्रेरित किया। कार्यशाला के समापन अवसर पर कुलपति ने प्रतिभागियों को प्रमाण-पत्र व मोरिंगा के पौधे भी वितरित किए।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
उमर उजाला	28-9-24	4	3-6

एचएयू और न्यूजीलैंड की मैसी यूनिवर्सिटी के वैज्ञानिक मोरिंगा पर संयुक्त रूप से करेंगे शोध एचएयू में मोरिंगा को लेकर 10 दिवसीय अंतरराष्ट्रीय कार्यशाला का समापन माई सिटी रिपोर्टर

हिसार। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के जैव रसायन विभाग की ओर से 'मोरिंगा (सहजन) की क्षमता को पहचानना : विश्व स्वास्थ्य और जलवायु परिवर्तन के प्रति सहनशीलता के अवसर' विषय पर 10 दिवसीय अंतरराष्ट्रीय कार्यशाला एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम संपन्न हुआ। समारोह में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर कांबोज मुख्यातिथि रहे। उन्होंने कहा कि इस परियोजना के तहत एचएयू और न्यूजीलैंड की मैसी यूनिवर्सिटी के वैज्ञानिक मोरिंगा पर संयुक्त रूप से शोध कार्य करेंगे। इस कार्यशाला में 25 प्रतिभागियों ने भाग लिया जिसमें एचएयू के अलावा जीजेयू, एसकेएनएयू जोबनेर, डॉ. वाईएस परमार यूनिवर्सिटी ऑफ हॉर्टिकल्चर एंड फोरेस्ट्री व उतरांचल यूनिवर्सिटी देहरादून, के विद्यार्थी



एचएयू में कुलपति प्रो. कांबोज प्रतिभागियों को प्रमाण-पत्र वितरित करते हुए। स्रोत विधि

व वैज्ञानिक शामिल थे।

कुलपति प्रो. कांबोज ने कहा कि मोरिंगा स्वास्थ्य लाभ वाले पोषक तत्वों का एक प्रमुख स्रोत है। मोरिंगा सेहत के लिए वरदान है। इस पौधे के सभी भाग फायदेमंद होते हैं, लेकिन इसके पत्ते अधिक गुणकारी होते हैं। कुलपति ने प्रतिभागियों को प्रमाण-पत्र व मोरिंगा के पौधे भी वितरित किए।

अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने बताया कि मोरिंगा को लेकर विश्व स्तर पर अनुसंधान किए जा रहे हैं।

मोरिंगा प्रोटीन का बड़ा स्रोत

मोरिंगा जिसे सहजन भी कहा जाता है। मोरिंगा की पत्तियां प्रोटीन का एक बड़ा स्रोत है और इसमें सभी महत्वपूर्ण एमीनों एसिड भी होते हैं। इसकी पत्तियां मुख्य रूप से कैल्शियम, पोटेशियम, फॉस्फोरस, आयरन और विटामिन ए, डी, सी से भरपूर होती हैं। मोरिंगा की पत्तियां शरीर में ऊर्जा बढ़ाने के साथ-साथ डायबिटीज, इम्यून सिस्टम, हड्डियों और लीवर सहित विभिन्न बीमारियों के इलाज में इस्तेमाल की जाती हैं।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पंजाब रेसरी	28-9-24	3	1-4

हकृवि में मोरिंगा को लेकर कार्यशाला का समापन

हिसार, 27 सितम्बर (ब्यूरो): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के जैव रसायन विभाग द्वारा 'मोरिंगा की क्षमता को पहचानना: विश्व स्वास्थ्य और जलवायु परिवर्तन के प्रति सहनशीलता के अवसर' विषय पर 10 दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम संपन्न हुआ। इस कार्यशाला में 25 प्रतिभागियों ने भाग लिया, जिसमें हकृवि के अलावा गुजवि, एम.के.एन.ए.यू. जोबनेर, डॉ. वाई.एस. परमार यूनिवर्सिटी ऑफ हॉर्टिकल्चर एंड फोरेस्ट्री व उतरांचल यूनिवर्सिटी देहरादून, के विद्यार्थी व वैज्ञानिक शामिल थे। कार्यशाला के समापन अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज मुख्यातिथि रहे।

कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने अपने संबोधन में कहा कि मोरिंगा स्वास्थ्य लाभ वाले पोषक तत्वों का एक प्रमुख स्रोत है। मोरिंगा सेहत के लिए वरदान है। इस पौधे के सभी



कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज प्रतिभागियों को प्रमाण-पत्र वितरित करते हुए।

भाग फायदेमंद होते हैं लेकिन इसके पत्ते अधिक गुणकारी होते हैं। मोरिंगा ना सिर्फ सेहत के लिए फायदेमंद है बल्कि इसे ब्यूटी प्रोडक्ट के रूप में भी इस्तेमाल किया जाता है।

इसमें विभिन्न प्रकार के विटामिन पर्याप्त मात्रा में पाए जाते हैं। मोरिंगा एक बहुउद्देशीय पौधा है जिसे आहार, औषधीय, औद्योगिक और चारे के उद्देश्य से भी उगाया जाता है। प्रो. काम्बोज ने सभी प्रतिभागियों से इस कार्यशाला का लाभ उठाने

के लिए कहा और अलग-अलग विभागों को मिलकर कार्य करने के लिए प्रेरित किया। कार्यशाला के समापन अवसर पर कुलपति ने प्रतिभागियों को प्रमाण-पत्र व मोरिंगा के पौधे भी वितरित किए।

अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने बताया कि मोरिंगा को लेकर विश्व स्तर पर अनुसंधान किए जा रहे हैं। उन्होंने बताया कि मोरिंगा की खासियत यही है कि इसे पानी की कमी होने की स्थिति में भी उगाया

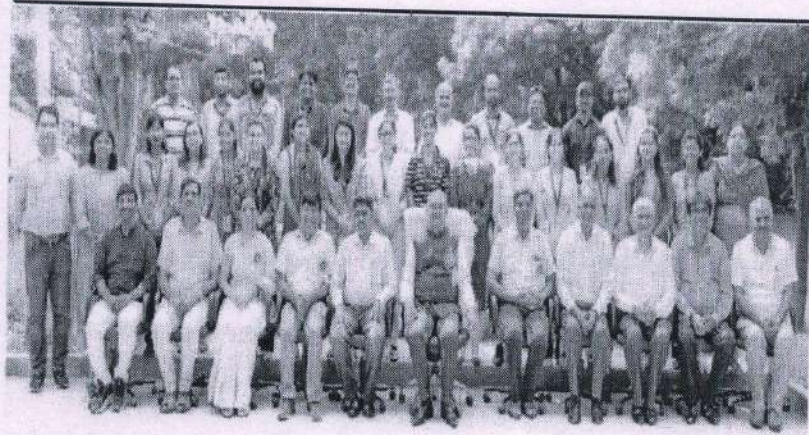
जा सकता है। उन्होंने बताया कि मोरिंगा को सुपरफूड के रूप में भी जाना जाता है क्योंकि ये कई तरह के जरूरी पोषक तत्वों, खनिज पदार्थों और विटामिंस का बेहतरीन स्रोत है। उन्होंने कहा कि इस परियोजना के तहत हकृवि और न्यूजीलैंड की मैसी यूनिवर्सिटी के वैज्ञानिक मोरिंगा पर संयुक्त रूप से शोध कार्य करेंगे।

विभागाध्यक्ष डॉ. जयंती टोकस ने इस अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला एवं प्रशिक्षण के दौरान विभिन्न सत्रों के बारे में विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने बताया कि मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा यह कार्यशाला 'स्पार्क' परियोजना के तहत आयोजित की गई। शोधार्थी अमीषा व सुजीता ने कार्यशाला के संबंध में अपने अनुभव व सांझा किए। कार्यशाला के दौरान डॉ. चंदरेश कुमारी, डॉ. अक्षय भुकर, डॉ. क्रेग मैकगिल, डॉ. योगेश जिंदल, डॉ. भागीरथ सिंह चौहान, डॉ. राजेन्द्र सांगवान, डॉ. ब्लेयर मोसेस कामांगा, डॉ. नीरू रेडू, डॉ. जसबीर सिंह, डॉ. संदीप आर्य ने मोरिंगा से संबंधित अपने व्याख्यान दिए।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हैलो हिसार	28.09.2024	---	--



मोरिंगा खूबसूरती एवं सेहत के लिए वरदान : प्रो. बी.आर. काम्बोज

हिसार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के जैव रसायन विभाग द्वारा 'मोरिंगा की क्षमता को पहचानना विश्व स्वास्थ्य और जलवायु परिवर्तन के प्रति सहनशीलता के अवसर' विषय पर 10 दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम संपन्न हुआ। इस कार्यशाला में 25 प्रतिभागियों ने भाग लिया जिसमें हकृवि के अलावा जीजेयू हिसार, एसकेएनएयू जोबनेर, डॉ. वाईएस परमार यूनिवर्सिटी ऑफ हॉर्टिकल्चर एंड फोरेस्ट्री व उत्तरांचल यूनिवर्सिटी देहरादून, के विद्यार्थी व वैज्ञानिक शामिल थे। कार्यशाला के समापन अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज मुख्यातिथि रहे।

कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने अपने संबोधन में कहा कि मोरिंगा स्वास्थ्य लाभ वाले पोषक तत्वों का एक प्रमुख स्रोत है। मोरिंगा सेहत के लिए वरदान है। इस पौधे के सभी भाग फायदेमंद होते हैं लेकिन इसके पत्ते अधिक गुणकारी होते हैं। मोरिंगा ना सिर्फ सेहत के लिए फायदेमंद है बल्कि इसे ब्यूटी प्रोडक्ट के रूप में भी इस्तेमाल किया जाता है। इसमें विभिन्न प्रकार के विटामिन पर्याप्त मात्रा में पाए जाते हैं। मोरिंगा एक बहुउद्देशीय पौधा है जिसे आहार, औषधीय, औद्योगिक और चारे के उद्देश्य से भी उगाया जाता है।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सिटी पल्स	27.09.2024	---	--

मोरिंगा खूबसूरती व सेहत के लिए वरदान : प्रो. काम्बोज

हकृवि में मoringa को लेकर 10 दिवसीय अंतरराष्ट्रीय कार्यशाला का समापन

सिटी पल्स न्यूज, हिंसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के जैव रसायन विभाग द्वारा 'मoringa की श्रमता को पहचानना विश्व स्वास्थ्य और जलवायु परिवर्तन के प्रति सहनशीलता के अवसर' विषय पर 10 दिवसीय अंतरराष्ट्रीय कार्यशाला एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम संपन्न हुआ। इस कार्यशाला में 25 प्रतिभागियों ने भाग लिया जिसमें हकृवि के अलावा जीनेंगु हिंसार, एसकेएनएयू जोबनेर, डॉ. वाइएस परमार यूनिवर्सिटी ऑफ हॉर्टिकल्चर एंड फोरेस्ट्री व उतरांचल यूनिवर्सिटी देहरादून, के विद्यार्थी व वैज्ञानिक शामिल थे। कार्यशाला के समापन अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज



कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज प्रतिभागियों को प्रमाण-पत्र वितरित करते हुए

मुख्यातिथि रहे।

कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कहा कि मoringa स्वास्थ्य लाभ वाले पोषक तत्वों का एक प्रमुख स्रोत है। मoringa सेहत के लिए वरदान है। इस पौधे के सभी भाग फायदेमंद होते हैं लेकिन इसके पत्ते अधिक गुणकारी होते हैं। मoringa ना सिर्फ सेहत के लिए

फायदेमंद है बल्कि इसे ब्यूटी प्रोडक्ट के रूप में भी इस्तेमाल किया जाता है। इसमें विभिन्न प्रकार के विटामिन पर्याप्त मात्रा में पाए जाते हैं। मoringa एक बहुउद्देशीय पौधा है जिसे आहार, औषधीय, औद्योगिक और चारे के उद्देश्य से भी उगाया जाता है। चारे को फसल के रूप में मoringa को

बढ़ावा दिया जा रहा है। उन्होंने बताया कि खाद्य पदार्थों के अलावा मoringa का प्रयोग ईंधन, पशु चारा, उर्वरक, सौंदर्य प्रसाधन एवं इत्र में भी किया जाता है। प्रो. काम्बोज ने बताया कि मoringa हीमोग्लोबिन को बेहतर बनाने में मदद करता है। रक्तचाप व कोलेस्ट्रॉल को नियंत्रित करता है। लीवर और किडनी को डिटॉक्सिफाई करता है। बज्रन को घटाने व शुगर लेवल को नियंत्रित करता है। तनाव, चिंता को कम करता है। थायरॉइड फंक्शन में सुधार करता है। स्तनपान कराने वाली माताओं के दूध में बढ़ोतरी करता है। प्रो. काम्बोज ने सभी प्रतिभागियों से इस कार्यशाला का लाभ उठाने के लिए कहा और अलग-अलग विभागों को मिलकर कार्य करने के लिए प्रेरित किया। कार्यशाला के समापन अवसर पर

कुलपति ने प्रतिभागियों को प्रमाण-पत्र व मoringa के पौधे भी वितरित किए।

अनुसंधान निदेशक डॉ. राजवीर गर्ग ने बताया कि मoringa को लेकर विश्व स्तर पर अनुसंधान किए जा रहे हैं। उन्होंने बताया कि मoringa की खासियत यह है कि इसे पानों की कमी होने की स्थिति में भी उगाया जा सकता है। उन्होंने बताया कि मoringa को सुपफूड के रूप में भी जाना जाता है क्योंकि ये कई तरह के जरूरी पोषक तत्वों, खनिज पदार्थों और विटामिंस का बेहतरीन स्रोत है। उन्होंने कहा कि इस परियोजना के तहत हकृवि और न्यूजीलैंड की मैसी यूनिवर्सिटी के वैज्ञानिक मoringa पर संयुक्त रूप से शोध कार्य करेंगे।

विभागाध्यक्ष डॉ. जयंती टोक्स ने इस अंतरराष्ट्रीय कार्यशाला एवं

प्रशिक्षण के दौरान विभिन्न सत्रों के बारे में विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने बताया कि मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा यह कार्यशाला 'स्मार्क' परियोजना के तहत आयोजित की गई। शोधार्थी अमीषा व सुजीता ने कार्यशाला के संबंध में अपने अनुभव व साझा किए। कार्यशाला के दौरान डॉ. चंद्रेश कुमार, डॉ. अश्वय भूकर, डॉ. क्रेग मैक्गिल, डॉ. योगेश जितल, डॉ. भागीरथ सिंह चौहान, डॉ. राजेन्द्र सांगवान, डॉ. ब्लेयर मोसेस कामांगा, डॉ. नीरू रेडू, डॉ. जसवीर सिंह, डॉ. अमित गोस्वामी, डॉ. भारतभूषण, डॉ. अतुल जैन, डॉ. अनिल दाहुना, डॉ. फियोना, डॉ. सीमा परमार, डॉ. मुरलीधर, डॉ. शिखा यशवीर, डॉ. सुरेन्द्र धनखड़ व डॉ. संदीप आर्य ने मoringa से संबंधित अपने व्याख्यान दिए।